प्रथम अध्याय

पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया का अनुशीलन।

प्रथम अध्याय

पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया का अनुशीलन।

१.१ विषय प्रवेश

महाराष्ट्र में द्वितीय भाषा के रूप में छात्र हिंदी का अध्ययन करते हैं। पाँचवीं कक्षा से हिंदी विषय की शुरुआत होती है। मातृभाषा मराठी होने के कारण छात्र हिंदी भाषा को सक्षमता से अभिव्यक्त नहीं कर पाते। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होने पर भी अधिकांश छात्र हिंदी भाषा को सरलता से बोल नहीं सकते हैं। अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

छात्रों को भाषिक कौशल का विकास नहीं हो पाता है। क्या छात्रों को भाषिक कौशल समझने की बौद्धिक क्षमता नहीं हैं। छात्र अपने लिखित या मौखिक रूप, अपने विचारों की अभिव्यक्ति सहजता से नहीं कर पाता है। क्या पाठ्यपुस्तक भाषिक कौशल, आशय का भंडार बढ़ाने में छात्रों को सहायक सिद्ध नहीं होती है? या पाठशाला में छात्रों को पढ़ाने में कम समय मिलता है? इन तमाम प्रश्नों से विचार निर्माण होता है, कि इसपर अनुसंधान होना अनिवार्य है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति मंडल द्वारा प्रकाशित कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का भाषा एवं आशय की दृष्टि से अनुशीलन किया गया है। पाठ्यपुस्तक कक्षा नौवीं - १९९४-२००६, कक्षा दसवीं १९९५-२००७ की है।

अनुसंधान विधान

"हिंदी भाषा एवं आशय की दृष्टि से कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन।"

माध्यमिक शिक्षा में भाषा एवं आशय की दृष्टि से छात्र बहुत सारी गलतियाँ करते हैं। उसपर अनुशीलन करना है।

परिभाषिक शब्दों की परिभाषा -

हिंदी भाषा - (स्त्री) "उत्तर भारत की प्रचलित भाषा, भारत में अधिकांश लोग हिंदी भाषा बोलते हैं। भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा"३

आशय- (पु) किसी भी विषय का उद्देश्य हेतु, स्थान तपसील होता है।"४

कक्षा नौवीं /दसवीं :-

"औपचारिक शिक्षा में हर एक कक्षा के पाठ्यक्रम कुछ विभाग में बँटा गया है। आमतौरपर सुलभता से कठिनता की ओर तत्व की दृष्टि से विचार किया जाता है। छात्रों को उनके बढ़ते हुए उम्र के अनुसार पाठ्यक्रम के एक एक विभाग आगे होते हैं। और नया पाठ्यक्रम भी पढ़ने को मिलता है। वैसे ही नौवीं कक्षा के बाद दसवीं कक्षा का अध्ययन छात्रों को करना पडता है।" ५

पाठ्यपुस्तक - (Text Book) (स्त्री) :-

"नयी शिक्षा की नीति के अनुसार नियुक्त की गई किताब" ६

अनुशीलन- (पु)

"किसी भी विषय की जानकारी लेना। अनुसंधान करते समय परिशीलन करना। विस्तार से जानकारी, परिशीलन"७

इसप्रकार, प्रस्तुत अनुसंधान विधान शब्दों की परिभाषा मिलती है।

१.२ पाठ्यचर्या

१.२.१ स्वरूप -

शिक्षण प्रक्रिया में तीन बातें महत्त्वपूर्ण होती हैं।

(१) शिक्षा के लक्ष्य निश्चित करना।

(२) लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उद्देश्य और उद्देश्यों के अनुसार पाठ्यचर्चा तैयार करना।

(३) योग्य अध्यापन पद्धति का उपयोग करना।

पाठ्यचर्या शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति का एक प्रभावी माध्यम है।

१.२.२ पाठ्यचर्या का अर्थ एवं परिभाषा-

पाठ्यचर्या को अंग्रेजी में Curriculum शब्द है। शिक्षण प्रक्रिया में उद्देश्य प्राप्त करने के लिए अध्यापक और छात्रों को पार करने की दूरी या फासले को पाठ्यचर्या कहेंगे। इस दूरी के द्वारा छात्रों को मानसिक, बौद्धिक और भावात्मक आदि विविध अंगों का विकास करना

अभिप्रेत है।

परिभाषा-

एडवर्ड क्रुग ने कहा है कि, "शिक्षा की आकांक्षाएँ प्रत्यक्ष सामने लाने का साधन पाठ्यचर्या है।"८

प्रोबेल का कहना है कि 'मानवी प्रतियोगिता (दौड) में आनेवाले अनुभव और ज्ञान इनके सारांश, इनका विचार पाठ्यचर्या में होता है।'

१.२.३ पाठ्यचर्या का ढाँचा-

(कक्षा नौवीं एवं दसवीं) माध्यमिक स्तर (सन १९९४-९५)

(१) एक भाषा (मातृभाषा)
(२) हिंदी, अंग्रेजी, मराठी संयुक्त पाठ्यचर्या
(३) विज्ञान
(४) गणित
(५) सामाजिक शास्त्र
(६) कार्यानुभव
(७) कला
(८) शा.शि.एवं स्वास्थ

उपर्युक्त पाठ्यचर्या का ढाँचा कक्षा नौवीं एवं दसवीं की पाठ्यचर्या निर्माण के तत्त्वों के अनुसार बना है। सभी विषयों का समावेश किया गया है।

१.३ पाठ्यक्रम

पाठ्यचर्या मार्ग दिखाती है। पाठ्यक्रम दिशा निश्चित करने का प्रयास करता है, इसलिए शिक्षा प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। छात्रों को प्रत्यक्ष रूप में क्या करना है, उसे स्पष्ट करता है।

१.३.१ पाठ्यक्रम:अर्थ एंव परिभाषा -

पाठ्यक्रम को अंग्रेजी में Syllabus कहते हैं।

विशिष्ट कालावधि में पूर्ण करने के लिए विषय का जो ढाँचा होता है उसे पाठ्यक्रम कहा जाता है।

"पाठ्यचर्या में अंतर्भूत (समावेश) किए हुए प्रत्येक विषय की क्रमबद्ध रचना को

पाठ्यक्रम कहा जाता है।"

परिभाषा -

एम.एम.भाटिया और सी.एल.नारंग ने कहा है कि, "पाठ्यक्रम वह विषय सामग्री है जिसे एक कक्षा में विद्यार्थियों को एक निश्चित समय में पढ़ाना होता है।"९

पाठ्यक्रम की आवश्यकता के अनुसार कक्षा नौवीं एवं दसवीं का पाठ्यक्रम

कक्षा नौवीं एवं दसवीं का पाठ्यक्रम,पाठ्यक्रम की आवश्यकता के अनुसार बना है, शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के अनुसार बना है। शिक्षा को व्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्न किया है। शिक्षा को नियमित बनाने के लिए प्रयत्न किया गया है। छात्रों को मार्गदर्शन के अनुसार बना है। विषय के सभी अंगों को संतुलित रखने का प्रयास किया है। छात्रों की योग्यता का मूल्यमापन हो उस दृष्टि से पाठ्यक्रम बनाया है।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यक्रम,पाठ्यक्रम निर्माण के तत्त्वों के अनुसार बनाया गया है। छात्रों की बौद्धिक,मानसिक दृष्टि से विकास हो यह ध्यान में लेकर पाठ्यक्रम बनाया गया है।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के पाठ्यक्रम के उद्देश्य यह है कि छात्र अपने विचार स्पष्ट रूप में हिंदी में प्रकट करे। शुद्ध एवं सुवाच्य रूप में हिंदी में लिखे। प्रश्नों के उत्तर, अपने विचार, कविताओं के आशय, हिंदी के भाषण सहजता से अभिव्यक्त कर सके।

१.३.२ महाराष्ट्र राज्य के हिंदी पाठ्यक्रम: नौवीं एवं दसवीं

नौवीं कक्षा का पाठ्यक्रम -

- गद्य-पृष्ठ संख्या ५५ (पाठ-कथात्मक, संवादात्मक, चरित्रात्मक,वर्णनात्मक)
- पद्य- पंक्तियाँ १०८ तक आठ कविताएँ आधुनिक हैं।

  चार समूहगीतों का समावेश किया गया है। चार समूहगीतों को कंठस्थ करना है। सूक्ष्म अध्ययन अपेक्षित नहीं है।
- व्याकरण-

  पूर्वज्ञान की आवृत्ति- शब्दभेद-विकारी, क्रियाभेद, कारक एवं विभक्तियाँ।

  लिंग एवं वचन परिवर्तन, काल परिचय।

काल परिवर्तन-भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यकाल।

मुहावरों एवं कहावतों का अर्थ पूर्ण वाक्यों में प्रयोग।

वाक्य संरचना

आदि व्याकरण का समावेश नौवीं पाठ्यक्रम में किया गया है।

◎ रचना-

पत्र लेखन - कार्यालयीन, घरेलू, व्यावसायिक

कहानी लेखन- मुद्दों के आधार पर

वृत्तांत लेखन - सभा, समारोह, सम्मेलन आदि का वृत्तांत लेखन।

निबंध लेखन - आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक

अनुवाद लेखन- गद्य आकलन, सार लेखन

आदि रचना का समावेश नौवीं पाठ्यक्रम में किया गया है।

मौखिक कार्य - कविता पठन, परिच्छेद पठन, नाट्यीकरण आदि प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना।

आदि मौखिक कार्य का समावेश किया है।

दसवीं कक्षा का पाठ्यक्रम

◎ गद्य-पृष्ठ संख्या ६२ (कथात्मक, संवादात्मक, चरित्रात्मक, वर्णनात्मक)

◎ पद्य- पंक्तियाँ १४३ तक आठ कविताएँ आधुनिक है।

◎ व्याकरण-

पूर्वज्ञान की आवृत्ति- शब्दभेद, अव्यय के भेद, पदबंध।

क्रिया- सहायक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया।

वाक्य संरचना

पदबंध- संज्ञा पदबंध, विशेषण पदबंध।

आदि व्याकरण का समावेश किया गया है।

◎ रचना-

पत्र लेखन - घरेलू, व्यावसायिक, घरेलू।

कहानी लेखन- मुद्दों के आधार पर

वृत्तांत लेखन - सभा, समारोह, सम्मेलन आदि का वृत्तांत लेखन।

आकलन - गद्य आकलन

निबंध- वर्णनात्मक, विचारात्मक, आत्मकथनात्मक

आदि रचनाओं का समावेश पाठ्यक्रम में किया गया है।

मौखिक कार्य - कविता पठन, परिच्छेद पठन, विविध शालेय / आंतर शालेय

स्पर्धाओं में सहभाग अपेक्षित है।

१.४ पाठ्यपुस्तक

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या बनाने के बाद पाठ्यक्रम बनाया जाता है, उसके बाद पाठ्यपुस्तक बनाया जाता है। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एक दूसरे पर आधारित है।

१.४.१ पाठ्यपुस्तक की परिभाषा -

(१) Text book is half of appratus of teaching- Kneating.१०

(२) छात्रों को पढ़ाने के लिए या पढ़ने के लिए जिस पुस्तक में आवश्यक पाठ्यांश मिलता है ऐसी पुस्तकों को पाठ्यपुस्तक कहा जाता है।

१.४.२ पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता-

भाषा शिक्षा में पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता निम्न प्रकार की है।

१. पाठ्यपुस्तक शिक्षक के लिए मार्गदर्शक है। इसी आधार पर अध्यापक अपनी अध्यापन नीति निर्धारित करता है।

२. पाठ्यपुस्तक अपने आप में अध्यापन का एक प्रतिमान (Model) है, पाठ्यक्रम का आशय छात्रों तक किस प्रकार से पहुँचाना चाहिए इसका पाठ्यपुस्तक पथप्रदर्शन करती है।

३. पाठ्यपुस्तक ज्ञानप्राप्ति का साधन है। भाषा घटकों के अध्ययन के साथ-साथ वह एक संज्ञापन का साधन है। विचार, संस्कार, नीति, भाव आदि पाठकों तक पहुँचाने का वह एक सशक्त साधन है।

४. पाठ्यपुस्तक का मूलभूत उद्देश्य लेखन, वाचन कौशल्यों का विकास है। लेखन, वाचन,

कौशल विकास की सामग्री पाठ्यपुस्तक में सुलभता से उपलब्ध होती है।

५. Education is a message अर्थात शिक्षा सूचना है। पुस्तक सूचनाओं का संग्रह है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कैसे वर्तन करना चाहिए इसके संबंध में सूचना पुस्तक में होती है।

६. पुस्तक स्वाध्ययन का आधार है। मौन पठन स्वाध्ययन का साधन है और पुस्तक मौन पठन का आधार है। इसलिए मौन पठन कौशल के विकास के लिए पुस्तक अनिवार्य है।

१.४.३ पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया

पहली सीढ़ी

पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि का अंतिम स्वीकृति देने का अधिकार तैयार करना।
पाठ्यपुस्तक के संपादन लेखकों की नियुक्ति करना।

पाठ्यपुस्तक के लेखक / संपादक की अंतिम नियुक्ति का अधिकार तथा कार्यकारी परिषद निर्माण करना।

विषय अध्ययन मंडल के सदस्य नियुक्त करना।

३/५ संपादक लेखकों की नियुक्ति करना।

दूसरी सीढ़ी

पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि का मसौदा तैयार करना।

पाठ्यपुस्तक का ढाँचा, लेखकों के लिए मार्गदर्शन तत्त्व तैयार करने की पहली संयुक्त सभा आयोजित करना।

लेखकों के लेख को स्वीकृति और आवश्यक सूचना देने के लिए दूसरी संयुक्त सभा आयोजित करना।

पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि का मसौदा (आकृतियाँ, चित्र आदि के साथ) तैयार करने के लिए ३/४ संयुक्त सभा आयोजित करना।

तीसरी सीढ़ी

पाठ्यपुस्तक के मसौदे के बारे में टीका, समीक्षा तैयार करना।

मसौदे के बारे में तज्ञों का अभिप्राय (डाक से) लेना।

चुनी हुई पाठशालाओं में नमुना अध्ययन लेना।

तज्ञों की ओर से समीक्षा करवाना।

पाठ्यपुस्तक के मसौदे पर तज्ञों का, समीक्षकों का पाठशालाओं का मसौदा उपलब्ध कराना।

संयुक्त सभा, पाठ्यपुस्तक के संबंध में, तज्ञों की टीका, समीक्षा, रिपोर्ट आदि पर विचार, पांडुलिपि मसौदे का अंतिम स्वीकृति, पाठ्यपुस्तक की मुद्रण प्रत तैयार करना।

चौथी सीढ़ी

पांडुलिपि का विषय, अध्ययन मंडल सदस्य, लेखकों की अंतिम स्वीकृति, मुद्रण के लिए मुद्रणोचित पांडुलिपि तैयार करना।

भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों की पांडुलिपि छपाई के लिए प्रस्तुत करना।

भाषात्तर विषयों का अन्य भाषा में अनुवाद करना।

अनुवाद कर्ताओं की नियुक्ति करना।

भाषात्तर विषयों के पाठ्यपुस्तको का अन्य माध्यमों से अनुवाद करना।

अनुवादित सामग्री की जाँच करना।

अनुवादित पाठ्यपुस्तकों का मुद्रणोचित पांडुलिपि तैयार करना।

पाठ्यपुस्तकों का अनुवादित हस्तलिखित छपाई के लिए प्रस्तुत करना।

पाँचवीं सीढ़ी

छपाई और निर्मिती करना।

मुद्रण का ढाँचा बनाना।

पृष्ठनिहाय मुद्रण का वाचन करना।

मुद्रण जाँचकारों की अंतिम स्वीकृति देना।

पाठ्यपुस्तक की छपाई को अंतिम आदेश देना।

पाठ्यपुस्तक की बिक्री आरंभ करना। ११

१.४.४ कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों की विशेषताओं के आधार पर समीक्षा।

पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ दो भागों में मिलती हैं।

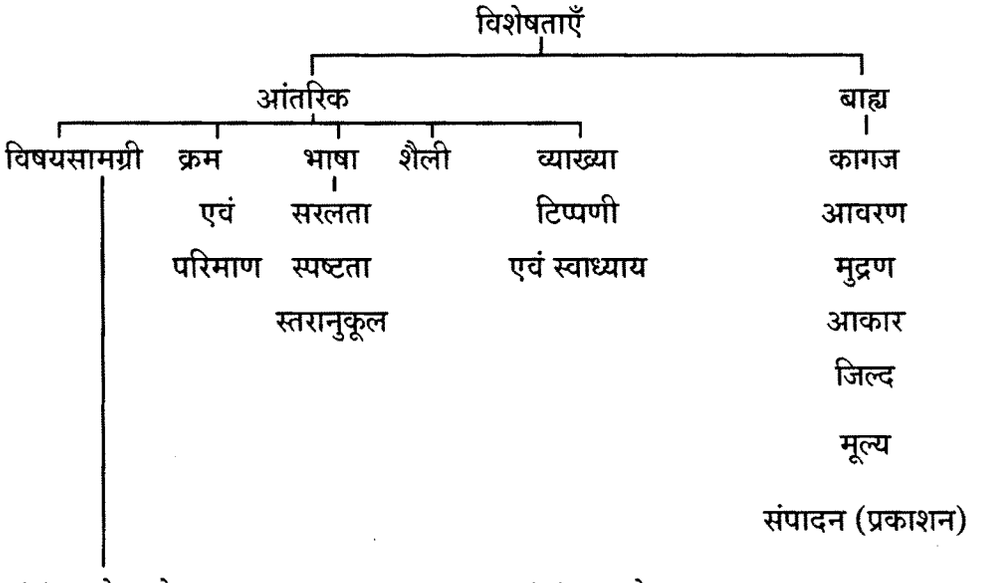

(१) उद्देश्य के अनुकूल
(२) मनौवैज्ञानिक आवश्यकता के अनुकूल
(३) छात्रों के पूर्वज्ञान के अनुसार
(४) जीवन के साथ संबंधित
(५) रोचक एवं मनोरंजक
(६) काल्पनिक विषयों का परिहार
(७) उपदेशात्मकता
(८) विविधता
(९) समवाय
(१०) साहित्यकारों की उचित रचनाओं का समावेश
(११) मौलिकता
(१२) नैतिक एवं प्रेरणादायक

(१) विषय सामग्री-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक में पढ़ने पढ़ाने की सामग्री उचित दी है। इस सामग्री के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्य पूरे होने में सहायक बन जाएगी।

उद्देश्य के अनुकूल-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। पाठ्यपुस्तको में राष्ट्रीय एकता, भावात्मक सामंजस्य, सर्वधर्म समभाव, व्यावहारिक कुशलता का परिपोष तथा संवर्धन करनेवाले पाठ है। **'यह देश एक है'** प्रस्तुत पाठ में सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता का संवर्धन है।

मनोवैज्ञानिक आवश्यकता के अनुकूल-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकें छात्रों की अध्ययन की दृष्टि से योग्य है। इसमें छात्रों की भावात्मक एवं मानसिक आवश्यकताओं को ध्यान दिया गया है। साहसिक कार्य में **'स्वामी रामानंद तीर्थ'** का चरित्र प्रधान पाठ दिया गया है। वैज्ञानिक आविष्कार की दृष्टि से **'विक्रम साराभाई'** पाठ आदर्शवत है।

छात्रों से पूर्वज्ञान से संबधित-

छात्र पाँचवी कक्षा से हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त करता है, उसे पाठों के माध्यम से विभिन्न जानकारी प्राप्त होती है। नौवीं एवं दसवीं के पाठ भी उससे पूर्वज्ञान के आधार पर दिए गए हैं। पूर्वज्ञान के आधार पर विषय सामग्री है।

जीवन के साथ संबधित-

छात्रों को अपने जीवन में लाभ हो, ऐसे पाठ कक्षा नौवीं एवं दसवीं पाठ्यपुस्तक में दिए गए हैं। छात्रों को अपना विकास करने के लिए प्रेरणादायी पाठ मिलते हैं। उदा. **'खेल जगत की उड़नपरी'**

रोचक एवं मनोरंजक-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के पाठ्यपुस्तक में रोचक एवं मनोरंजक पाठों का समावेश किया गया है। उदा. **'जुड़वाँ भाई', 'दीपावली'**

काल्पनिक विषयों का परिहार-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के पाठ्यपुस्तक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखा गया है। काल्पनिक विषयों का परिहार कहीं भी दिखाई नहीं देता है।

उपदेशात्मकता-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के पाठ्यपुस्तक में कई पाठों के माध्यम से छात्रों की आप से आप उपदेश मिलता है। उदा. **'डबली बाबू'** पाठ के माध्यम से आदर्श चरित्र के गुण, **'खेल जगत की उड़नपरी'** पाठ के माध्यम से खेल में रुचि रखना जरूरी है। आदि कई पाठ आए हैं।

विविधता-

पाठ्यपुस्तक में विषय सामग्री की विविधता आई है। ये विविधता निम्न प्रकार की है।

(१) विषयों की विविधता - सामाजिक, प्राकृतिक पारिवारिक वातावरण के विविध विषयों का समावेश हो गया है। उदा. पारिवारिक वातावरण चित्रित करने की दृष्टि से **'पराया बच्चा'** पाठ का समावेश किया गया है। प्राकृतिक दृष्टि से **'यह देश एक है'** पाठ का समावेश किया है।

(२) विधाओं की विविधता- कक्षा नौवीं एवं दसवीं की पाठ्यपुस्तक में कहानी, एकांकी, कविताएँ निबंध और संस्मरण आदि विधाओं की विविधता की दृष्टि से पाठ दिए गए हैं।

(३) रुचियों की विविधता- पाठ्यपुस्तक में रुचियों की विविधता दिखाई देती है। **उदा. 'मजे रेल्वे सफर के', 'जनक की पीड़ा', 'आठ दिन की जिंदगी'।**

(४) राष्ट्रीय दृष्टिकोण में विविधता- राज्यों की विशेषताओं का समावेश हो गया है। **'यह देश एक है'** पाठ में विशेषता एवं विविधता में एकता की भावना दिखाई देती है।

समवाय -

पाठ्यपुस्तक में विभिन्न विषयों की जानकारी मिलती हैं। विषयों के साथ समवाय स्थापित किया गया है।

साहित्यकारों की उचित रचनाओं का समावेश -

प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रेमचंद, सुदर्शन, रामधारी सिंह 'दिनकर', मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, हरिवंश राय बच्चन आदि की रचनाओं का चयन किया गया है।

मौलिकता-

लेखक के मूल विचार, मौलिकता पाठो में दिखाई देती है। सभी पाठो में लेखक, कवि के विचार ठीक से प्रकट किए हैं, गर्भित भावार्थ दिखाई देता है।

नैतिक एवं प्रेरणादायक-

विषयसामग्री में नैतिक एवं चारित्रिक विकास से संबंधित प्रेरणादायक विषय का समावेश किया है। उदा. (१) देवेंद्रनाथ शर्मा लिखित **'अतिथिदेवो भव'** पाठ है। (२) पी. वी.

नरसिंहराव द्वारा लिखित **'स्वामी रामानंद तीर्थ'** पाठ है।

(२) क्रम एवं परिमाण-

पाठ्यपुस्तकों का ज्ञात से अज्ञात के क्रम का पालन हुआ है। विषय सामग्री कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं के क्रमिक रूप से संबंधित है। माध्यमिक स्तर के अनुसार वीरतापूर्ण साहसी कहानियाँ, देशभक्तिपर, शिकारकथा आदि का समावेश किया गया है। पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पाठों में निश्चित क्रम है।

परिणाम-

विषय सामग्री की मात्रा उचित है लेकिन कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं के एक एक गद्य पाठ निर्धारित समय में नहीं लिए है। विषयसामग्री की कठिनाई तथा सरलता की मात्रा में संतुलन है। पाठ अधिक लंबे नहीं है।

(३) भाषा-

कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों की भाषा सरलता, स्पष्टता, स्तरानुकूल की दृष्टि से युक्त है।

(४) शैली-

पाठ्यपुस्तक में विविधता तथा स्तरानुकूलता का ध्यान रखा गया है। उच्च कक्षाओं में नाटकीय शैली, वर्णनात्मक शैली, भावात्मक एवं प्रधान शैलियों का प्रयोग किया है।

(५) व्याख्या-

टिप्पणी एवं स्वाध्याय की, दृष्टि से पाठ्यपुस्तक में उचित प्रयोग हुआ है।

१. प्रत्येक पाठ के आरंभ में कवि, लेखक का परिचय दिया गया है।

२. प्रत्येक पाठ के प्रारंभ में पाठ का उद्देश्य बताया है।

३. प्रत्येक पाठ के अंत में कठिन शब्दों तथा मुहावरों का अर्थ दिया है। ऐतिहासिक एवं पौराणिक प्रसंगों का उल्लेख किया है।

४. प्रत्येक पाठ के अंत में अपरिचित वस्तुओं, तथ्यों तथा नामों पर टिप्पणियाँ दी है।

५. प्रत्येक पाठ के अंत में स्वाध्याय दिया है।

बाह्य विशेषताएँ -

कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक का बाह्य रूप रंग आकर्षित है।

१. कागज - पाठ्यपुस्तक का कागज अच्छा है।

२. आवरण - पाठ्यपुस्तक का आवरण सुंदर और आकर्षक है।

३. मुद्रण - मुद्रण सुस्पष्ट, आकर्षक और सुंदर है। अक्षर सुडौल और सुस्पष्ट है। दो शब्दों और दो पंक्तियों में उचित अंतर है।

४. आकार - पाठ्यपुस्तक की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई उचित है।

५. जिल्द - पाठ्यपुस्तक की जिल्द मजबूत है। उसकी सिलाई-बंधाई पक्की है।

६. मूल्य - पाठ्यपुस्तक का मूल्य उचित है। कक्षा नौवीं के पाठ्यपुस्तक का मूल्य ८.८० पैसे और दसवीं के पाठ्यपुस्तक का मूल्य ८.६० पैसे हैं।

इस प्रकार कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक उचित बनी है। पाठ्यपुस्तक की विशेषताओं के आधारपर बनी है। पाठ्यपुस्तक के आंतरिक एवं बाह्य विशेषताएँ उचित बनी है।

पाठ्यपुस्तकों के प्रकार -

पाठ्यपुस्तकों के दो प्रकार होते हैं।

१. सूक्ष्म अध्ययनार्थ पाठ्यपुस्तक (Intensive Study)

२. विस्तृत अध्ययनार्थ पुस्तक (सहायक पुस्तक)

निष्कर्ष

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एक दूसरे पर आधारित है। कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक उचित बनी हैं। पाठ्यचर्या भी कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर के अनुसार बनी है। पाठ्यक्रम स्तरानुकूल बना है। पाठ्यपुस्तक शिक्षा के प्रसार को बढ़ाने के लिए मौलिक चिंतन के लिए आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया में ग्रामीण तथा शहरी अध्यापक, तज्ञों, लेखकों आदि का समावेश करना चाहिए, ताकि ग्रामीण और शहरी छात्रों की दृष्टि से पुस्तक बनायी जाए, छात्र सुलभता से अध्ययन कर सके। चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी। शिक्षा की मार्गदर्शक बनता है। मौलिक चिंतन के लिए प्रेरक बनता है। पाठ्यपुस्तक निर्मिति मंडल की स्थापना २७ जनवरी १९६७ में हुई। पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया की पाँच सीढियाँ हैं, जिससे उन प्रक्रिया से ही पाठ्यपुस्तक का निर्माण कार्य होता है। पाठ्यपुस्तक निर्माण के प्रमुख सिद्धांत पाठ्यपुस्तक बनाने के लिए बहुत सहायक सिद्ध होते हैं। चयन, क्रमनिर्धारण, प्रस्तुतीकरण, आवृत्ति, पाठ्यपुस्तक का अंतरंग एवं बाह्य रूप रंग आदि सिद्धांत से पाठ्यपुस्तक का निर्माण अच्छा बनता है। पाठ्यपुस्तक की विशेषताओं एवं आवश्यकता के अनुसार पाठ्यपुस्तक निर्माण करना चाहिए। कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक उचित बनी है।

संदर्भ

१. लोकभारती - नौवीं कक्षा- १९९४

महाराष्ट्र राज्य माध्य व उच्च माध्य शिक्षण मंडळ पुणे। (द्वितीय भाषा: पूर्ण) के पाठ्यक्रम के लिए

२. लोकभारती दसवीं कक्षा - १९९५

महाराष्ट्र राज्य माध्य व उच्च माध्य शिक्षण मंडळ पुणे। (द्वितीय भाषा:पूर्ण) के पाठ्यक्रम के लिए

३. जोशी प्र.न.

आदर्श मराठी शब्दकोश

४. आशय - नेने गो.प. / जोशी श्रीपाद

बृहत हिंदी मराठी शब्दकोश

५. शैक्षणिक टीपा कोश

लेखक - सोहनी शं.कृ.

एम.ए.एल.बी.

६. तदैव

७. प्रकाशक - प्रभु अ.ज.

विदर्भ राजवाडा बुक कंपनी

१३३४, शुक्रवार पेठ पुणे-२

८. डॉ. सौ. देशपांडे सुलोचना श्रीहरी - आशययुक्त अध्यापन पद्धति: हिंदी पृष्ठ क्र. ४९

९. भाटिया एम.एम. और नारंग सी.एल.- आधुनिक हिंदी शिक्षण विधि पृष्ठ.क्र.१४४

१०. डॉ. सौ. देशपांडे सुलोचना श्रीहरी - आशययुक्त अध्यापन पद्धति: हिंदी पृष्ठ क्र. ७९

११. बोकील श्री. रं. - मासिक पत्रिका शिक्षण संक्रमण दिसंबर १९८७ पृष्ठ क्र. ८०